कलयुग की लैला-2

प्रेषक : विजय पण्डित

रूपा और कविता दोनों ही एक साथ आशू से कैसे चुदी- यह आप पहले भाग भाग में पढ़ चुके हैं ! अब आगे :

अगले दिन दोपहर को मौसा जी घर आ चुके थे। उनके साथ उसके एक पुराने मित्र राजेश भी थे। उनके आते ही कविता और रूपा में कुछ बदलाव सा लगा, दोनों ही कुछ ज्यादा ही खुश नजर आ रही थी। कविता भी पहले से अधिक सेक्सी लगने लगी थी। उसने थोड़ा मेकअप भी किया हुआ था और मौसा जी से वो हंस-हंस के बात कर रही थी। रूपा ने राजेश की खूब आवभगत की और उससे खूब बातें की।

मौसा जी बार-बार कविता की तरफ़ देखते, कभी उसका फ़िगर देखते, कभी उसके सुडौल चूतड़ों को निहारते। आज जाने क्यों कविता बड़ी आकर्षक लग रही थी। मौसा को क्या पता था कि आज कविता ने भरपूर चुदाई करवा कर अपना मन शांत कर लिया था।

पर हां इससे कविता के मन में एक नया जोश और मर्दों के प्रति एक आकर्षण पैदा हो गया था। जैसे अधिकतर मर्द नारी को एक भोग्य वस्तु मानते हैं, वैसे ही उसे पुरुष भी भोगने की वस्तु लगने लगे थे। उसे लगने लगा था कि मर्द तो बस चूत के दीवाने रहते हैं, इन्हें तो जब चाहो तब पटा लो और चुदा लो। बस थोड़ी सी चूची दिखा दो और मर्दों का तम्बू तन जाता है। चुनांचे मौसा जी भी कविता के लिये उसी श्रेणी में आ चुके थे।

कविता दो दिनों में ही मौसा जी के बहुत निकट आ चुकी थी। कविता उन्हें हर तरफ़ से उसे पटाने में लगी थी। उसे आशा थी कि उसे एक नया लण्ड जल्दी ही मिल जायेगा। अभी तो सभी कुछ पर्दे के पीछे था। उधर रूपा भी राजेश से खूब घुल मिल गई थी। शाम को सब मौसा जी के साथ राजेश को घुमाने ले जाते थे। रूपा ने कविता को और कविता ने रूपा को यह बता दिया था कि वो इन मर्दों को पटा रही हैं। दोनों ने अपने पत्ते खोल रखे थे। कविता यदि मौसा के अधिक करीब आ जाती थी तो रूपा जानबूझ कर दूसरी ओर चली जाती थी और मौसा यह समझते थे कि मौका मिल गया। इस दौरान वो हाथ दबा देते थे और कभी कभी चूतड़ पर हाथ भी मार देते थे। बदले में कविता शर्माने का अभिमय कर देती थी।

उधर रूपा ने भी राजेश को पटा लिया था। रूपा जरा तेज थी, सो वो तो चुम्बन तक पहुंच गई थी।

"कविता ! अब तो मुझे चुदने की लग रही है ... अपने मौसा जी को कही बाहर ले जा ना !"

"शाम को मौसा जी को मैं घुमाने ले जाती हूँ और आप तबियत का बहाना बना लेना !"

दोनों ने अपनी ओर से सरल सा बहाना बना लिया। योजना के मुताबिक राजेश बाहर निकल गया और रूपा ने पेट दर्द का बहाना किया। मौसा जी तो चाहते ही थे कि उसे सिर्फ़ कविता का साथ मिले। कविता के थोड़े से ही कहने पर मौसा जी मान गये।

रूपा ने भी मंजूरी दे दी। दोनों कार में निकल पड़े और रूपा ने जल्दी से मोबाईल पर फ़ोन करके राजेश को वापस बुला लिया। राजेश तुरंत घर आ गया। राजेश सीधा रूपा के कमरे की तरफ़ बढ़ गया। रूपा उसे देखते ही शरमाती सी खिल गई।

"अब हम तुम इस कमरे में बंद हो तो..."

"धत्त, आप तो मजाक करने लगे..." रूपा ने राजेश को रिझाने का नाटक किया।

"अब तो मत शर्माओ ... अब तो एक मैं और एक तू ... दोनों मिले किस तरह... बताओ !"

"हाय रे ... आप दूर रहें ... मुझे कुछ होता है...!" राजेश ने रूपा का हाथ पकड़ कर अपनी ओर खींच लिया, रूपा जानबूझ कर उसके ऊपर गिरती हुई बोली,"हाय राम ... बैंया तो छोड़ो, मोच आ जायेगी

Copyright © Indian Porn Empire - 2010. All Rights Reserved.

ना..." रूपा फ़िल्मी अदाएँ दिखाते हुये राजेश से लिपट गई। दूसरे ही क्षण रूपा के मद भरे अमृत कलश उसकी हथेलियों में दबे हुये थे।

"मां री ! ... मत करो ना ... गुदगुदी होती है ...! " रूपा ने आह भरते हुये कहा,"दूर रहो जी... नीचे कुछ गड़ रहा है..."

मेरी मतवाली रूपा यही है वो मस्त चीज़ जो हमे अभी मस्ती देगी ... अब बनो मत ..."

"ना जी ... मत सताओ ... इसे दूर ही रखो ... मेरा मन डोल रहा है... हाय रे ! क्या कर रहे हो... घुसाये चले जा रहे हो... आह्हह मेरे राजेश...!!"

"मस्ती आ रही है ना... आओ अब अधरों का रसपान करें" राजेश भी भावना में बह कर बोला।

दोनों के होंठो की पत्तियां टकरा गई और एक दूसरे की जीभ से वो भीग गये।

होंठो का कसाव दोनों ने बढ़ा दिया और अधरपान में लीन हो गये। राजेश के मुँह से सीत्कार निकल पड़ी... रूपा ने उसका लण्ड कस कर दबा दिया था।

"अरे रूपा, तुम मुझे मार डालोगी... जरा धीरे से... कहीं निकल गया तो मजा नहीं आयेगा..."

"तो फिर जी, क्या करें ... मेरा तो मन डोल रहा है जी...!"

"चलो, पहले प्यास बुझा ले... कपड़े उतारो..."

"प्यास लग रही है तो कपड़े क्यूँ उतारें भला...?" रूपा ने शरमाते हुये कहा।

राजेश ने धीरे से रूपा की साड़ी उतार दी ... फिर ब्लाऊज को जबरदस्ती उतार दिया। रूपा की तरफ़ से ब्लाऊज़ उतारने का विरोध तो मात्र एक नाटक था, ब्लाऊज उतरते ही उसने अपनी उभरी

हुई जवानी को हाथों से छिपाने का नाकाम प्रयास किया। राजेश ने भी जल्दी से अपने कपड़े उतार फ़ैंके। अब रूपा के पेटीकोट की बारी थी, बस नाड़ा खींचने की देर थी। पेटीकोट झम से नीचे पांवों पर आ गिरा।

"मैं मर गई राम जी... और कभी अपनी चूत छिपाती तो कभी अपने उभरे हुये स्तनों को ढकने की कोशिश करती। राजेश ने अपने नंगे बदन से रूपा को लिपटा लिया और दोनों फिर बिस्तर पर एक दूसरे को धकेल कर लेट गये। दोनों ही एक दूसरे के शरीर को दबाते हुये लोट लगाने लगे। तभी रूपा सिसक उठी। उसकी चूत में राजेश का कड़क लण्ड बिना किसी पूर्व सूचना के उतर चुका था। रूपा के बदन में तरावट आने लगी। कब से नये लण्ड का इन्तज़ार कर रही थी और नये लण्ड ने उसकी चूत को स्वीकार करते हुये खेल-खेल में प्रवेश कर लिया था।

राजेश रूपा के नीचे दबा हुआ था और रूपा उसके ऊपर लण्ड पर बैठ गई थी। रूपा उसके लण्ड पर अपनी चूत भींचे जा रही थी और राजेश के चूतड़ ऊपर की ओर जोर लगा कर पूरा लण्ड अन्दर तक बैठाने की कोशिश में थे।

रूपा राजेश पर पिघले जा रही थी। उसकी चूत फ़ड़फ़डा रही थी। राजेश ने रूपा के सुडौल स्तन हिलते हुये देखे और उसके हाथ उन्हें थाम कर ऊपर नीचे करके उसे मसलने लगा। रूपा उस पर झुक गई

और चूत को आगे पीछे करके राजेश को चोदने लगी। राजेश का शरीर वासना में जलने लगा। वो अपने चूतड़ ऊपर उछाल कर रूपा को चोदने में सहायता करने लगा।

अब रूपा राजेश के शरीर के ऊपर लेट सी गई और आहें भरते हुये चूत को आगे-पीछे करके लण्ड का आनन्द लेने लगी। राजेश ने अतिउत्तेजना में रूपा को कमर से जकड़ लिया और धीरे से उसे अपने नीचे दबोच लिया।

राजेश अब ऊपर था और लण्ड जो कि इस उल्टा पल्टी में बाहर आ गया था, फिर से चूत में सरक गया। अब रूपा की भरपूर चुदने की बारी थी। राजेश के धक्के और झटके चूत पर चालू हो गये थे। और नीचे दबी रूपा आह... उहह... हाय रे... जैसी सीत्कारें निकाल रही थी।

राजेश अपने लण्ड को अपनी तसल्ली के लिये दबा के धक्के मार रहा था। नीचे दबी चुदैल रूपा

Copyright © Indian Porn Empire - 2010. All Rights Reserved.

को ये धक्के बडे प्यारे लग रहे थे। उसके हर जोरदार धक्के पर रूपा के मुँह से आह निकल जाती थी। तभी रूपा को लगा कि उसकी चूत जवाब देने वाली है, उसने अपनी प्यारी चूत को पूरी तरह से झड़ने के लिये तैयार कर ली और आंखें बंद करके अपनी चूत को ढीली छोड़ दी ताकि अच्छी प्रकार से

पानी निकल जाये। उसकी चूत अब रस छोड़ने वाली थी और बार बार अन्दर लहरें उठ रही थी। तभी रूपा ने अपनी चूत ऊपर की ओर दबाई और अपना रस छोड़ने लगी।

उसके मुँह से सिसकारियाँ निकल पड़ी। उसने राजेश को अपनी बाहों में दबा लिया और लण्ड को चूत में कस लिया। तभी राजेश का वीर्य भी छलक पड़ा। उसकी पिचकारी चूत में समाने लगी और फिर चूत के बाहर रिसने लगा। दोनों एक दूसरे को अपनी बाहों में समाये हुये यूं ही अपना रस निकालने में लगे रहे। उनकी आंखें आनन्द के मारे बंद थी। काफ़ी देर दोनों यों ही दुनिया से बेखबर पड़े रहे।

फ़िर रूपा कुछ अलसाई सी पता नहीं क्या बोली और अपना मोबाईल पर कविता को मिस कॉल कर दिया। राजेश भी उठा और जल्दी से कपड़े पहन कर रूपा को चूमा और घर से बाहर निकल गया। कुछ ही देर में कविता मौसा जी के साथ घर आ गई।

"अरे, वो राजेश नहीं आया...?" मौसा ने पूछा।

रूपा मुस्करा उठी,"आप जानें ... आपका दोस्त है...!"

रूपा कविता के कमरे में आ गई थी। दोनों सहेलियाँ कुछ गुपचुप बाते कर रही थी।

"मै सोने जा रहा हूँ... हम दोनों ने खाना बाहर खा लिया है... रूपा तुम भी खा लेना !"

मौसा जी अपने कमरे में जाकर बत्ती बंद करके लेट गये। रूपा भी मौसा जी के पीछे चली गई। कविता ने भी अपने रात को सोने वाले कपड़े पहन लिये या यूँ कहे कि बस एक सामने से खुला हुआ गाऊन डाल लिया और बिस्तर पर लेट गई।

शेष अगले भाग में ! २३ फ़रवरी, २०१०

Copyright © Indian Porn Empire - 2010. All Rights Reserved.